मेले और त्योहार

आम धारणा यह है कि दक्षिण एशिया में ज़्यादातर मेले और त्योहार धार्मिक किस्म के होते हैं। यह बात पूरी तरह सही नहीं है। इसमें कोई शक नहीं कि दक्षिण एशिया में धर्म हमारे मेलों और त्योहारों का एक मुख्य आधार रहा है लेकिन हमारे बहुत सारे मेले और त्योहार हमारी जनश्रुतियों, स्थानीय परंपराओं, बदलते मौसमों, फसलों की कटाई आदि से भी संबंधित रहे हैं। ये त्योहार आमतौर पर सभी धर्मों के लोगों में प्रचलित हैं। दक्षिण एशिया के मेले और त्योहार न केवल संख्या की दृष्टि से बल्कि अपने उद्‌गम की दृष्टि से भी विविधतापूर्ण दिखाई देते हैं। ये मौके दक्षिण एशिया के सांस्कृतिक जीवन का सारतत्व हैं। एकता और बहुलता, दक्षिण एशियाई सांस्कृतिक जीवन के इन दोनों आयामों में स्पष्ट देखी जा सकती है कि समूचे उपमहाद्वीप में मेलों और त्योहारों को लोग किस तरह मनाते हैं। नीचे हमने दक्षिण एशिया के मेलों और त्योहारों की कुछ खास विशेषताओं का उल्लेख किया है।

हालांकि सभी त्योहार खालिस धार्मिक सिद्धांतों पर आधारित नहीं होते लेकिन सभी त्योहारों में एक सामाजिक-धार्मिक समझ ज़रूर दिखाई देती है। प्रत्येक परंपरागत त्योहार के दो आयाम होते हैं—पूजा-पाठ और उत्सव। पूजा की क्रिया एक खास धर्म तक सीमित होती है। उदाहरण के लिए *होली, दीवाली* और *रामनवमी* पर हिंदू अपने देवी देवताओं की व्यक्तिगत या पारिवारिक स्तर पर उपासना करते हैं। *ईद* पर मुसलमान नमाज़ पढ़ने मस्जिद जाते हैं और सामूहिक रूप से उपासना करते हैं। *क्रिसमस* पर ईसाई अपनी धार्मिक गतिविधियों को संपन्न करने के लिए गिरजाघर में जाते हैं। लेकिन इनमें से ज़्यादातर त्योहारों पर जो मेले आयोजित होते हैं उनमें केवल संबंधित समुदायों के लोग ही नहीं जाते। इन मेलों और समारोहों में सभी समुदायों के लोग हिस्सा लेते हैं। *होली, दीवाली, ईद, बैसाखी, क्रिसमस* आदि सभी त्योहारों पर आसपास के सभी लोग हिस्सा लेते हैं। इसका मतलब है कि धार्मिक विषयवस्तु होते हुए भी इन त्योहारों में एक साझापन और विभिन्न धर्मों के बीच एक सामाजिक सहसंबंध होता है।

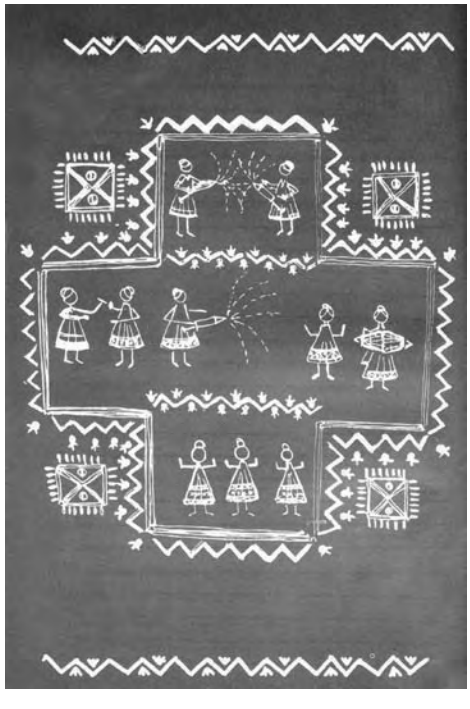

चित्र: जागोरी नोटबुक '90 से

ज़्यादातर त्योहार मौसमी किस्म के होते हैं। ये त्योहार कटाई के मौसमों से जुड़े होते हैं। सभी मौसमी त्योहार खरीफ (अगस्त-अक्तूबर) और रबी (मार्च-अप्रैल), इन दो कटाई के मौसमों में मनाए जाते हैं। *बिहू* (जनवरी का मध्य), *ओणम* (सितंबर-अक्तूबर), *पोंगल* (जनवरी का मध्य), *वसंत पंचमी* (फरवरी), *मकर संक्रांति* (जनवरी), *लोहड़ी* (जनवरी), *बैसाखी* (अप्रैल), इन सभी क्षेत्रीय त्योहारों का एक खेतिहर स्रोत रहा है। ये सभी किसी न किसी फसल की कटाई से संबंधित त्योहार हैं। इस प्रकार इन सभी त्योहारों में कुछ साझा पहलू देखे जा सकते हैं।

खेती और कटाई से संबंधित होने के कारण इन त्योहारों में गैर-धार्मिक या धर्मनिरपेक्ष पहलू समारोह के स्तर पर बहुत स्पष्ट दिखाई देते हैं। *पतंगबाज़ी* मकर संक्रांति के मेलों का एक खास पहलू रहा है। बिहू त्योहार के समय *बिहू नृत्य* सबसे बड़ा आकर्षण होता है। देश के प्रमुख शास्त्रीय नृत्यों में शुमार होने वाला *कथक्कली नृत्य* ओणम के अवसर पर सबका मन मोह लेता है। ओणम के मौके पर *नौका दौड़* (वल्लुमकली) का भी उत्साह से आयोजन किया जाता है। इस दौड़ में लगभग 100 आदमी गाजे-बाजों के शोर में खास तरह की नावों को तेज़ी से खेते हैं। *लोहड़ी* के समय पूरा पंजाब जोशोखरोश में डूब

जाता है और *भांगड़े* की धुन पर थिरकता है। गुजरात में *गरबा नृत्य* के बिना नवरात्रि का त्योहार अधूरा दिखता है। इस फेहरिस्त को और आगे बढ़ाया जा सकता है (बंगाल में *दुर्गा पूजा,* ज़्यादातर उत्तरी भारत में *दशहरा,* ब्रज के इलाके में *होली,* महाराष्ट्र में *गणेश चतुर्थी,* आदि)। यदि इनमें से ज़्यादातर त्योहारों में उत्सव के तौर-तरीकों का अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि इन सभी के केंद्र में गैर-धार्मिक, यानी गैर-उपासना, गैर-सैद्धांतिक और गैर-विशिष्टतावादी गतिविधियों का ही बोलबाला रहता है।

ज़्यादातर मेलों में धार्मिक आयाम महत्वपूर्ण नहीं होते। कुंभ मेले जैसे कुछ अवसर ही इसका अपवाद हैं जहां बड़ी संख्या में लोग धर्म के इर्द-गिर्द इकट्ठा होते हैं। मेलों में मुख्य रूप से मवेशियों, बकरियों, हाथ की बनी चीज़ों की खरीद-फरोख्त और अन्य गतिविधियों की बहुतायत रहती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि हमारे मेले दक्षिण एशिया की परंपरागत-व्यावसायिक ज़िंदगी का प्रतिनिधित्व करते हैं। हालांकि कुछ मेलों में धार्मिक अनुष्ठान भी किए जाते हैं लेकिन उनका स्तर बहुत सीमित होता है।

दक्षिण एशिया के मेलों और त्योहारों के मनाने का ढंग यहां के सांस्कृतिक जीवन के प्रमुख आयामों से मिलता-जुलता रहा है। यहां के त्योहार मुख्य रूप से धार्मिक रहे हैं लेकिन वे पूरी तरह धार्मिक सिद्धांतों या कुछ खास लोगों तक सीमित नहीं होते। ये त्योहार सिर्फ़ इस मायने में धार्मिक हैं क्योंकि उनका जन्म एक खास धर्म से हुआ है। लेकिन उत्सव पद्धति के लिहाज़ से धर्म उनमें ज़्यादा महत्व नहीं रखता। इतना ही नहीं, धर्मों की गहरी विविधता और भिन्नता के बावजूद भी उनमें कुछ बुनियादी समानताएं ढूंढी जा सकती हैं।

नाम और स्वरूप के लिहाज़ से बहुत सारे त्योहार भले ही भिन्न दिखाई देते हों लेकिन उन सबकी भावना और स्रोत एक होता है। मेले केवल सतही तौर पर धार्मिक दिखाई देते हैं और मुख्य रूप से ये दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक-व्यावसायिक परंपराओं की उपज हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यदि त्योहारों में धार्मिक या सैद्धांतिक विषयवस्तु होती है तो भी उनका स्वरूप हमेशा गैर-धार्मिक ही होता है। मेलों की अंतर्वस्तु भी अकसर गैर-धार्मिक दिखाई देती है। सभी धार्मिक-सांस्कृतिक रुझान ज़्यादातर त्योहारों में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं लेकिन उनकी मूलभूत समानताओं पर कभी कोई संशय नहीं हो सकता। दक्षिण एशिया के मेले और त्योहार इस उपमहाद्वीप की साझी विरासत, समन्वयवाद और बहुलता का एक भव्य प्रतीक हैं।

साभारः आई.एस.डी.

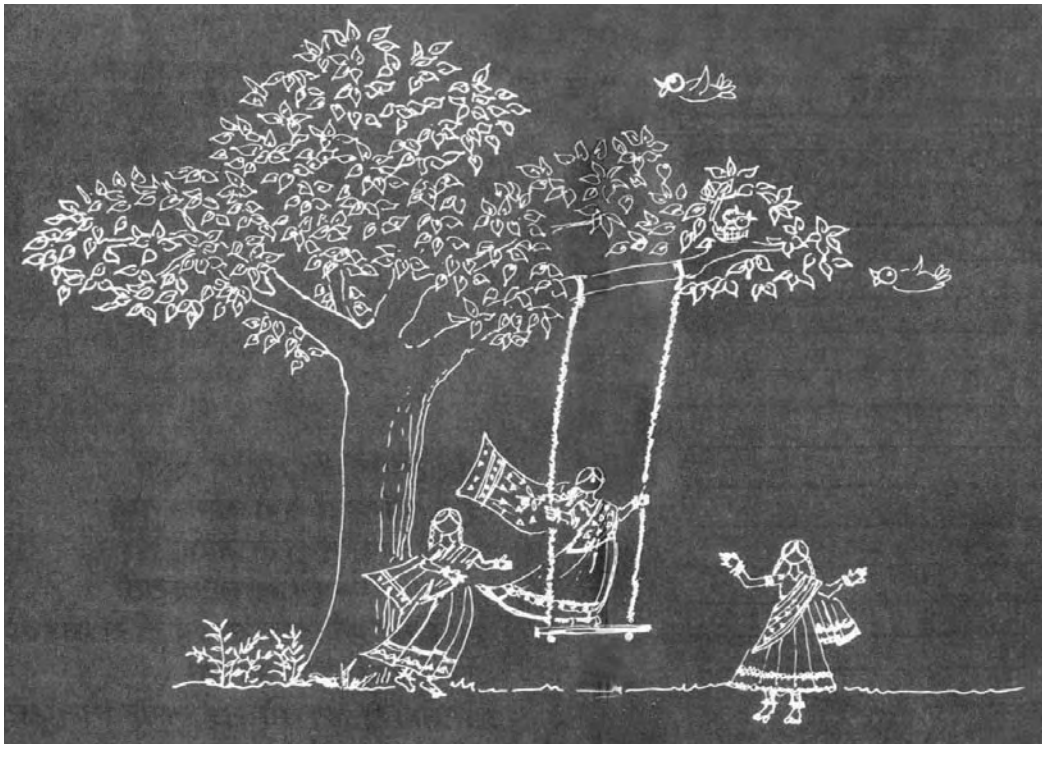

चित्रः जागोरी नोटबुक '90 से